दलित साहित्य

संवेदना के आयाम

सम्पादक
पी. रवि
वी.जी. गोपालकृष्णन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

DALIT SAHITYA : SAMVEDANA KE AAYAM
Edited by P. Ravi, V.G. Gopalkrishnan

ISBN : 978-93-88684-25-5
Criticism

© सम्पादक एवं लेखकगण
प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : ₹ 695

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

प्रकृति : एक दलित कवि की वेदना और संवेदना 115
शान्ति नायर

अपना इतिहास लिखता (दलित) उपन्यास 130
पी. रवि

हिन्दी दलित साहित्यकारों की उपन्यास यात्रा 140
दिलीप मेहरा

वैश्वीकरण के दौर में वेश्याकरण की एक कहानी 155
प्रमोद कोवप्रत

हिन्दी दलित आत्मकथाओं का वैशिष्ट्य 160
विजय कुमार प्रसाद

दलित कहानी में प्रतिरोधी स्वर 165
गीता कुञ्जम्मा सी.

दलित स्त्री आन्दोलन तथा साहित्य : अस्मितावाद से आगे 175
बजरंग बिहारी तिवारी

दलित स्त्री का प्रतिरोधी स्वर 197
अंजु के.ए.

हिन्दी के दलित नाटक : इतिहास और वर्तमान 206
सर्वेश कुमार मौर्य

अपने इतिहास को ढोता दलित 238
के.वी. शशी

दलित कहानी में प्रतिरोधी स्वर

गीता कुञ्जम्मा सी.

समकालीन विद्रूप सामाजिक संरचना में चाहे पुरुष हो या स्त्री, सवर्ण हो या अवर्ण सामान्यतः शोषण का शिकार है। यह शोषण सामाजिक हो या मानसिक, आर्थिक हो या धार्मिक उसके विरुद्ध विद्रोह होना स्वाभाविक है। पुराने जमाने से ही भारतीय समाज का आधार जाति व्यवस्था रही है। इस वर्ण व्यवस्था के फलस्वरूप दलित हाशिएकृत वर्ग के अन्दर माने गये हैं। फलतः शताब्दियाँ बीत जाने पर भी दलितों को सामाजिक, आर्थिक और मानसिक शोषण सहना पड़ा। सदियों से चली आ रही अस्पृश्यता की परम्परा, दासता आदि से दलितों को मुक्त करना, उनमें अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति चेतना जगाना आदि को लक्ष्य करके ज्योतिबा फुले, डॉ. अम्बेडकर आदि ने दलित आन्दोलन चलाया। यह दलित मुक्ति आन्दोलन साहित्य का प्रेरणास्रोत बन गया। सामाजिक विभेद, वर्ण–व्यवस्था, ब्राह्मणवादी नैतिकता, सामाजिक–संरचनात्मक अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध अपनी अस्मिता को सजग रखने को लक्ष्य करके दलित साहित्य का सृजन हुआ। वर्ण व्यवस्था के तहत जारी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दमन के प्रतिरोध और प्रतिशोध की चेतना के रूप में दलित चेतना को आँका जा सकता है। अतः दलित साहित्य में प्रतिरोध और प्रतिशोध का स्वर मुखरित है। वर्तमान समय के साहित्य में दलित जीवन के विविध आयामों की अभिव्यक्ति सशक्त रूप में हो रही है। समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में दलित विमर्श चर्चा का विषय बन गया है। कहानी साहित्य भी इससे अनछुआ नहीं है।

दलितों की अशिक्षा का लाभ उठाने वाली सवर्ण की करतूतों की ओर संकेत करने वाली कहानी है 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' (ओमप्रकाश

साहित्य और आलोचना प्राकृतिक रूप से तात्कालिक होते हुए भी दूरगामी होते हैं। वे एक परम्परा-व्यवस्था को ध्वस्त कर दूसरे विकल्प का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। समकालीन दलित साहित्य काफ़ी हद तक इस प्रगतिशील मार्ग पर उन्मुख है। दलित साहित्य पुरानी परिपाटी, सड़ी-गली मान्यताओं को रौंदते हुए एक नये मानवीय साहित्य और मानवीय समाज संरचना के निर्माण की ओर अग्रसर है लेकिन गति थोड़ी धीमी है और उसकी सामाजिक विज्ञप्ति भी सीमित है। इसी कारण दलित साहित्य की ठीक जानकारी गैर-दलित समाज में कम है और जो जानकारी है वह भ्रमित करने वाली है। इन मनोदशाओं के बावजूद दलित साहित्य की जनपक्षधरता, सामाजिक प्रतिबद्धता, प्रगतिशील विचारधारा की शक्ति और समर्पण के कारण यह विश्वास मज़बूत होता है कि दलित साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है और वह आने वाले समय में मुख्यधारा के साहित्य का विकल्प बन जायेगा।

आलोचना/Criticism

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by Artist Maqbool Fida Husain

www.vaniprakashan.com

e
E-book Available

ISBN : 978-93-88684-25-5